Sign in to edit and save changes to this file.

अंक-193 कानपुर, बुधवार 20 सितम्बर 2023 पृष्ठ-8

दैनिक

आज का कानपुर

मक्का,बाजरा एवं ज्वार में लगने वाले प्रमुख कीट एवं उनका प्रभावी नियंत्रण

आज का कानपुर

कानपुर । चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर कानपुर के कृषि वैज्ञानिक डॉ अजय कुमार सिंह ने मक्का,ज्वार, एवं बाजरा फसल में लगने वाले कीटों के नियंत्रण हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि खरीफ मक्का 14049 हेक्टेयर, ज्वार 14676 हेक्टेयर एवं बाजरा की खेती जनपद में 21956 हेक्टेयर क्षेत्रफल में की जाती है। उन्होंने बताया कि मक्के में कार्बोहाइड्रेट 70 प्रतिशत, प्रोटीन 10 प्रतिशत के अलावा अन्य पोषक पदार्थ भी पाया जाता है। जिसके कारण इसका उपयोग मनुष्य के साथ-साथ पशु आहार के रूप में भी किया जाता है। उन्होंने बताया कि तना छेदक कीट मक्के के लिए सबसे अधिक हानिकारक कीट है। मक्का के अलावा यह ज्वार एवं बाजरे मे भी हानि पहुँचाता है 7 ध्यान देने वाली बात यह है कि इसकी सुंडियां 20 से 25 मिमी लम्बी और स्लेटी सफेद रंग की होती है। जिसका सिर काला होता है और चार लम्बी भूरे रंग की लाइन होती है। इस कीट की सुंडियाँ तनों में छेद करके अन्दर ही अन्दर खाती रहती हैं। फसल के प्रारम्भिक अवस्था में प्रकोप के फलस्वरूप मृत गोभ बनता है, परन्तु बाद की अवस्था में प्रकोप अधिक होने पर पौधे कमजोर हो जाते हैं और भुट्टे छोटे आते हैं एवं हवा चलने पर पौधा बीच से टूट जाता है इस कीट के नियंत्रण हेतु किसान भाई मक्का की फसल में संतुलित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करें। इसके रसायनिक नियंत्रण हेतु क्विनालफास 25 प्रतिशत, ई.सी. 1.5 ली. को 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर छिडक़ाव करें। उन्होंने बताया कि फॉल आर्मीवर्म ऐसा कीट है, जो कि एक मादा पतंगा अकेले या समूहों में अपने जीवन काल में एक हजार से अधिक अंडे देती है।

Title-code: UPHIN-48963
E-mail: jksingh.hardoi@gmail.com
सत्य का असर
समाचार पत्र

20,09,2023 jksingh.hardoi@gmail.com मोबाइल नंबर 9956834016

Top News

पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल

मक्का,बाजरा एवं ज्वार में लगने वाले प्रमुख कीट एवं उनका प्रभावी नियंत्रण

पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल

कानपुर चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर कानपुर के कृषि वैज्ञानिक डॉ अजय कुमार सिंह ने मक्का,ज्वार, एवं बाजरा फसल में लगने वाले कीटों के नियंत्रण हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि खरीफ मक्का 14049 हेक्टेयर, ज्वार 14676 हेक्टेयर एवं बाजरा की खेती जनपद में 21956 हेक्टेयर क्षेत्रफल में की जाती है। उन्होंने बताया कि मक्के में कार्बोहाइड्रेट 70%, प्रोटीन 10% के अलावा अन्य पोषक पदार्थ भी पाया जाता है। जिसके कारण इसका उपयोग मनुष्य के साथ-साथ पशु आहार के रूप में भी किया जाता है। उन्होंने बताया कि तना छेदक कीट मक्के के लिए सबसे अधिक हानिकारक कीट है। मक्का के अलावा यह ज्वार एवं बाजरे मे भी हानि पहुँचाता है | ध्यान देने वाली बात यह है कि इसकी सुंडियां 20 से 25 मिमी लम्बी और स्लेटी सफेद रंग की होती है। जिसका सिर काला होता है और चार लम्बी भूरे रंग की लाइन होती है। इस कीट की सुंडियाँ तनों में छेद करके अन्दर ही अन्दर खाती रहती हैं। फसल के प्रारम्भिक अवस्था में प्रकोप के फलस्वरूप मृत गोभ बनता है, परन्तु बाद की अवस्था में प्रकोप अधिक होने पर पौधे कमजोर हो जाते हैं और भुट्टे छोटे आते हैं एवं हवा चलने पर पौधा बीच से टूट जाता है।इस कीट के नियंत्रण हेतु किसान भाई मक्का की फसल में संतुलित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करें। इसके रसायनिक नियंत्रण हेतु क्विनालफास 25 प्रतिशत, ई.सी. 1.5 ली. को 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर छिडक़ाव करें। उन्होंने बताया कि फॉल आर्मीवर्म ऐसा कीट है, जो कि एक मादा पतंगा अकेले या समूहों में अपने जीवन काल में एक हजार से अधिक अंडे देती है। इसके लार्वा पत्तियों को किनारे से पत्तियों की निचली सतह और मक्के के भुट्टे को भी खाते हैं। इसकी लार्वा अवस्था ही मक्का की फसल को बहुत नुकसान पहुंचाती है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि संतुलित मात्रा में रासायनिक उर्वरकों का सही प्रयोग करें। खेत में पड़े पुराने खरपतवार और अवशेषों को नष्ट करें। इस कीट के नियंत्रण के लिए रासायनिक कीटनाशक जैसे ट्रानिलिप्रोएल 5 प्रतिशत 0.4 मिली की दर से प्रति लीटर पानी या स्पिनेटोरम 11.7 प्रतिशत एस.सी. 0.5 मिली की दर से प्रति लीटर पानी या थायोमेथोक्जाम 12.6 प्रतिशत + लेम्डा साइहेलोथ्रिन मिक्चर 9.5 प्रतिशत जेड. सी. 0.25 मिली प्रति लीटर पानी में घोलकर छिडक़ाव करें। अथवा इमामे ट्रिन बेंजोएट 1 ग्राम 1 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर दें।मक्का, ज्वार तथा बाजरे की फसल के चारो तरफ गेन्दा या लोबिया की बुआई करने से भी कीट का नियंत्रण किया जा सकता है।हरे भुट्टे हेतु बोई फसल मे भुट्टा तोड़ने के 15 दिन पहले दवा का छिड़काव बंद कर दें |

वर्ष-17 अंक-259 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रुपए कानपुर, बुधवार 20 सितम्बर 2023

कानपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी, ऐटा, हरदोई, उन्नाव, कानपुर देहात में प्रसारित

दैनिक नगर छाया

RNI N.UPHIN/2007/27090

आप की आवाज़.....

मक्का, बाजरा व ज्वार में लगने वाले कीटों के नियंत्रण हेतु एडवाइजरी जारी

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर कानपुर के कृषि वैज्ञानिक डॉ अजय कुमार सिंह ने मक्का,ज्वार, एवं बाजरा फसल में लगने वाले कीटों के नियंत्रण हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि खरीफ मक्का 14049 हेक्टेयर, ज्वार 14676 हेक्टेयर एवं बाजरा की खेती जनपद में 21956 हेक्टेयर क्षेत्रफल में की जाती है। उन्होंने बताया कि मक्के में कार्बोहाइड्रेट 70त्न, प्रोटीन 10त्न के अलावा अन्य पोषक पदार्थ भी पाया जाता है। जिसके कारण इसका उपयोग मनुष्य के साथ-साथ पशु आहार के रूप में भी किया जाता है। उन्होंने बताया कि तना छेदक कीट मक्के के लिए सबसे अधिक हानिकारक कीट है। मक्का के अलावा यह ज्वार एवं बाजरे मे भी हानि पहुँचाता है 7 ध्यान देने वाली बात यह है कि इसकी सुंडियां 20 से 25 मिमी लम्बी और स्लेटी सफेद रंग की होती है। जिसका सिर काला होता है और चार लम्बी भूरे रंग की लाइन होती है। इस कीट की सुंडियाँ तनों में छेद करके अन्दर ही अन्दर खाती रहती हैं। फसल के प्रारम्भिक अवस्था में प्रकोप के फलस्वरूप मृत गोभ बनता है, परन्तु बाद की अवस्था में प्रकोप अधिक होने पर पौधे कमजोर हो जाते हैं और भुट्टे छोटे आते हैं एवं हवा चलने पर पौधा बीच से टूट जाता है।

इस कीट के नियंत्रण हेतु किसान भाई मक्का की फसल में संतुलित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करें। इसके रसायनिक नियंत्रण हेतु क्विनालफास 25 प्रतिशत, ई.सी. 1.5 ली. को 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। उन्होंने बताया कि फॉल आर्मीवर्म ऐसा कीट है, जो कि एक मादा पतंगा अकेले या समूहों में अपने जीवन काल में एक हजार से अधिक अंडे देती है। इसके लार्वा पत्तियों को किनारे से पत्तियों की निचली सतह और मक्के के भुट्टे को भी खाते हैं। इसकी लार्वा अवस्था ही मक्का की फसल को बहुत नुकसान पहुंचाती है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि संतुलित मात्रा में रासायनिक उर्वरकों का सही प्रयोग करें। खेत में पड़े पुराने खरपतवार और अवशेषों को नष्ट करें। इस कीट के नियंत्रण के लिए रासायनिक कीटनाशक जैसे ट्रानिलिप्रोएल 5 प्रतिशत 0.4 मिली की दर से प्रति लीटर पानी या स्पिनेटोरम 11.7 प्रतिशत एस.सी. 0.5 मिली की दर से प्रति लीटर पानी या थायोमेथोक्जाम 12.6 प्रतिशत + लेम्डा साइहेलोथ्रिन मिक्रर 9.5 प्रतिशत जेड. सी. 0.25 मिली प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। अथवा इमामे ट्रिन बेंजोएट 1 ग्राम 1 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर दें।मक्का, ज्वार तथा बाजरे की फसल के चारो तरफ गेन्दा या लोबिया की बुआई करने से भी कीट का नियंत्रण किया जा सकता है।हरे भुट्टे हेतु बोई फसल मे भुट्टा तोड़ने के 15 दिन पहले दवा का छिड़काव बंद कर दें।

मक्का,बाजरा और ज्वार में लगने वाले प्रमुख कीट एवं उनका प्रभावी नियंत्रण

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर कानपुर के कृषि वैज्ञानिक डॉ अजय कुमार सिंह ने मक्का,ज्वार, एवं बाजरा फसल में लगने वाले कीटों के नियंत्रण हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि खरीफ मक्का 14049 हेक्टेयर, ज्वार 14676 हेक्टेयर एवं बाजरा की खेती जनपद में 21956 हेक्टेयर क्षेत्रफल में की जाती है। उन्होंने बताया कि मक्के में कार्बोहाइड्रेट 70प्रतिशत, प्रोटीन 10प्रतिशत के अलावा अन्य पोषक पदार्थ भी पाया जाता है। जिसके कारण इसका उपयोग मनुष्य के साथ-साथ पशु आहार के रूप में भी किया जाता है। उन्होंने बताया कि तना छेदक कीट मक्के के लिए सबसे अधिक हानिकारक कीट है। मक्का के अलावा यह ज्वार एवं बाजरे मे भी हानि पहुँचाता है। ध्यान देने वाली बात यह है कि इसकी सुंडियां 20 से 25 मिमी लम्बी और स्लेटी सफेद रंग की होती है। जिसका सिर काला होता है और चार लम्बी भूरे रंग की लाइन होती है। इस कीट की सुंडियाँ तनों में छेद करके अन्दर ही अन्दर खाती रहती हैं। फसल के

प्रारम्भिक अवस्था में प्रकोप के फलस्वरूप मृत गोभ बनता है, परन्तु बाद की अवस्था में प्रकोप अधिक होने पर पौधे कमजोर हो जाते हैं और भुट्टे छोटे आते हैं एवं हवा चलने पर पौधा बीच से टूट जाता है। इस कीट के नियंत्रण हेतु किसान भाई मक्का की फसल में संतुलित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करें। इसके रसायनिक नियंत्रण हेतु क्विनालफास 25 प्रतिशत, ई.सी. 1.5 ली. को 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर छिडकाव करें। उन्होंने बताया कि फॉल आर्मीवर्म ऐसा कीट है, जो कि एक मादा पतंगा अकेले या समूहों में अपने जीवन काल में एक हजार से अधिक अंडे देती है। इसके लार्वा पत्तियों को किनारे से पत्तियों की निचली सतह और मक्के के भुट्टे को भी खाते हैं। इसकी लार्वा अवस्था ही मक्का की फसल को बहुत नुकसान पहुंचाती है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि संतुलित मात्रा में रासायनिक उर्वरकों का सही प्रयोग करें। खेत में पड़े पुराने खरपतवार और अवशेषों को नष्ट करें। इस कीट के नियंत्रण के लिए रासायनिक कीटनाशक जैसे ट्रानिलिप्रोएल 5 प्रतिशत 0.4 मिली की दर से प्रति लीटर पानी या स्पिनेटोरम 11.7 प्रतिशत एस.सी. 0.5 मिली की दर से प्रति लीटर पानी या थायोमेथोक्जाम 12.6 प्रतिशत + लेम्ड्रा साइहेलोथ्रिन मिक्चर 9.5 प्रतिशत जेड. सी. 0.25 मिली प्रति लीटर पानी में घोलकर छिडकाव करें। अथवा इमामे ट्रिन बेंजोएट 1 ग्राम 1 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर दें।मक्का, ज्वार तथा बाजरे की फसल के चारो तरफ गेन्दा या लोबिया की बुआई करने से भी कीट का नियंत्रण किया जा सकता है।हरे भुट्टे हेतु बोई फसल मे भुट्टा तोड़ने के 15 दिन पहले दवा का छिड़काव बंद कर दें।

हिन्दी दैनिक
RNI NO - UTTHIN/2018/76731
गांव देहात की खबर,शहर पर भी नजर

दि ग्राम टुडे

gramtodayeditor@gmail.com

बुधवार, 20 सितंबर 2023 | वर्ष:06 अंक: 29 | पेज: 08, मूल्य: 2 रूपये | उत्तराखंड,मध्य-प्रदेश,उत्तर-प्रदेश,राजस्थान,बिहार,महाराष्ट्र,गुजरात,संघ प्रदेश,से एक साथ प्रसारित

मक्का,बाजरा एवं ज्वार में लगने वाले प्रमुख कीट एवं उनका प्रभावी नियंत्रण हेतु जारी की एडवाइजरी

दि ग्राम टुडे, कानपुर।

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर कानपुर के कृषि वैज्ञानिक डॉ अजय कुमार सिंह ने मक्का,ज्वार, एवं बाजरा फसल में लगने वाले कीटों के नियंत्रण हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि खरीफ मक्का 14049 हेक्टेयर, ज्वार 14676 हेक्टेयर एवं बाजरा की खेती जनपद में 21956 हेक्टेयर क्षेत्रफल में की जाती है। उन्होंने बताया कि मक्के में काबोर्हाइड्रेट 70%, प्रोटीन 10% के अलावा अन्य पोषक पदार्थ भी पाया जाता है। जिसके कारण इसका उपयोग मनुष्य के साथ-साथ पशु आहार के रूप में भी किया जाता है। उन्होंने बताया कि तना छेदक कीट मक्के के लिए सबसे अधिक हानिकारक कीट है। मक्का के अलावा यह ज्वार एवं बाजरे मे भी हानि पहुँचाता है` ध्यान देने वाली बात यह है कि इसकी सुंडियां 20 से 25 मिमी लम्बी और स्लेटी सफेद रंग की होती है। जिसका सिर काला होता है और चार लम्बी भूरे रंग की लाइन होती है। इस कीट की सुंडियाँ तनों में छेद करके अन्दर ही अन्दर खाती रहती हैं। फसल के प्रारम्भिक अवस्था में प्रकोप के फलस्वरूप मृत गोभ बनता है, परन्तु बाद की अवस्था में प्रकोप अधिक होने पर पौधे कमजोर हो जाते हैं और भुट्टे छोटे आते हैं एवं हवा चलने पर पौधा बीच से टूट जाता है।

इस कीट के नियंत्रण हेतु किसान भाई मक्का की फसल में संतुलित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करें। इसके रसायनिक नियंत्रण हेतु क्विनालफास 25 प्रतिशत, ई.सी. 1.5 ली. को 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर छिडकाव करें। उन्होंने बताया कि फॉल आर्मीवर्म ऐसा कीट है, जो कि एक मादा पतंगा अकेले या समूहों में अपने जीवन काल में एक हजार से अधिक अंडे देती है। इसके लार्वा पत्तियों को किनारे से पत्तियों की निचली सतह और मक्के के भुट्टे को भी खाते हैं। इसकी लार्वा अवस्था ही मक्का की फसल को बहुत नुकसान पहुंचाती है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि संतुलित मात्रा में रासायनिक उर्वरकों का सही प्रयोग करें। खेत में पड़े पुराने खरपतवार और अवशेषों को नष्ट करें। इस कीट के नियंत्रण के लिए रासायनिक कीटनाशक जैसे ट्रानिलिप्रोएल 5 प्रतिशत 0.4 मिली की दर से प्रति लीटर पानी या स्पिनेटोरम 11.7 प्रतिशत एस.सी. 0.5 मिली की दर से प्रति लीटर पानी या थायोमेथोक्जाम 12.6 प्रतिशत + लेम्डा साइहेलोथ्रिन मिक्चर 9.5 प्रतिशत जेड. सी. 0.25 मिली प्रति लीटर पानी में घोलकर छिडकाव करें। अथवा इमामे ट्रिन बेंजोएट 1 ग्राम 1 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर दें।मक्का, ज्वार तथा बाजरे की फसल के चारो तरफ गेन्दा या लोबिया की बुआई करने से भी कीट का नियंत्रण किया जा सकता है।हरे भुट्टे हेतु बोई फसल मे भुट्टा तोड़ने के 15 दिन पहले दवा का छिड़काव बंद कर दें

मक्के में कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन के अलावा अन्य पोषक पदार्थ

डीटीएनएन

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर कानपुर के कृषि वैज्ञानिक डॉ अजय कुमार सिंह ने मक्का,ज्वार, एवं बाजरा फसल में लगने वाले कीटों के नियंत्रण हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि खरीफ मक्का 14049 हेक्टेयर, ज्वार 14676 हेक्टेयर एवं बाजरा की खेती जनपद में 21956 हेक्टेयर क्षेत्रफल में की जाती है।

उन्होंने बताया कि मक्के में कार्बोहाइड्रेट 70त्न, प्रोटीन 10त्न के अलावा अन्य पोषक पदार्थ भी पाया जाता है। जिसके कारण इसका उपयोग मनुष्य के साथ-साथ पशु आहार के रूप में भी किया जाता है। उन्होंने बताया कि तना छेदक कीट मक्के के लिए सबसे अधिक हानिकारक कीट है। मक्का के अलावा यह ज्वार एवं बाजरे मे भी हानि पहुँचाता है 7 ध्यान देने वाली बात यह है कि इसकी सुंडियां 20 से 25 मिमी लम्बी और स्लेटी सफेद रंग की होती है। जिसका सिर काला होता है और चार लम्बी भूरे रंग की लाइन होती है। इस कीट की सुंडियाँ तनों में छेद करके अन्दर ही अन्दर खाती रहती हैं। फसल के प्रारम्भिक अवस्था में प्रकोप के फलस्वरूप मृत गोभ बनता है, परन्तु बाद की अवस्था में प्रकोप अधिक होने पर पौधे कमजोर हो जाते हैं और भुट्टे छोटे आते हैं एवं हवा चलने पर पौधा बीच से टूट जाता है।

इस कीट के नियंत्रण हेतु किसान भाई मक्का की फसल में संतुलित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करें। इसके रसायनिक नियंत्रण हेतु किनालफास 25 प्रतिशत, ई.सी. 1.5 ली. को 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर छिड□ाव करें। उन्होंने बताया कि फॉल आर्मीवर्म ऐसा कीट है, जो कि एक मादा पतंगा अकेले या समूहों में अपने जीवन काल में एक हजार से अधिक अंडे देती है। इसके लार्वा पत्तियों को किनारे से पत्तियों की निचली सतह और मक्के के भुट्टे को भी खाते हैं। इसकी लार्वा अवस्था ही मक्का की फसल को बहुत नुकसान पहुंचाती है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि संतुलित मात्रा में रासायनिक उर्वरकों का सही प्रयोग करें। खेत में पड़े पुराने खरपतवार और अवशेषों को नष्ट करें। इस कीट के नियंत्रण के लिए रासायनिक कीटनाशक जैसे ट्रानिलिप्रोएल 5 प्रतिशत 0.4 मिली की दर से प्रति लीटर पानी या स्पिनेटोरम 11.7 प्रतिशत एस.सी. 0.5 मिली की दर से प्रति लीटर पानी या थायोमेथोक्जाम 12.6 प्रतिशत + लेम्डा साइहेलोथ्रिन मि. र 9.5 प्रतिशत जेड. सी. 0.25 मिली प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड□ाव करें। अथवा इमामे ट्रिन बेंजोएट 1 ग्राम 1 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर दें।मक्का, ज्वार तथा बाजरे की फसल के चारो तरफ गेन्दा या लोबिया की बुआई करने से भी कीट का नियंत्रण किया जा सकता है।हरे भुट्टे हेतु बोई फसल मे भुट्टा तोड़ने के 15 दिन पहले दवा का छिड़काव बंद कर दें 7

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष : 15 अंक : 81 कानपुर, बुधवार 20 सितम्बर 2023 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य : 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

मक्का, बाजरा एवं ज्वार में लगने वाले प्रमुख कीट एवं उनका प्रभावी नियंत्रण जरूरी

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर कानपुर के कृषि वैज्ञानिक डॉ अजय कुमार सिंह ने मक्का,ज्वार, एवं बाजरा फसल में लगने वाले कीटों के नियंत्रण हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि खरीफ मक्का 14249 हेक्टेयर, ज्वार 14676 हेक्टेयर एवं बाजरा की खेती जनपद में 21956 हेक्टेयर क्षेत्रफल में की जाती है। उन्होंने बताया कि मक्के में कार्बोहाइड्रेट 70%, प्रोटीन 10% के अलावा अन्य पोषक पदार्थ भी पाया जाता है। जिसके कारण इसका उपयोग मनुष्य के साथ साथ पशु आहार के रूप में भी किया जाता है। उन्होंने बताया कि तना छेदक कीट मक्के के लिए सबसे अधिक हानिकारक कीट है।

मक्का के अलावा यह ज्वार एवं बाजरे मे भी हानि पहुँचाता है 7 ध्यान देने वाली बात यह है कि इसकी सूंडियां 20 से 25 मिमी लम्बी और स्लेटी सफेद रंग की होती है। जिसका सिर काला होता है और चार लम्बी भूरे रंग की लाइन होती है। इस कीट की सूंडियाँ तनों में छेद करके अन्दर ही अन्दर खाती रहती हैं। फसल के प्रारम्भिक अवस्था में प्रकोप के फलस्वरूप मृत गोभ बनता है, परन्तु बाद की अवस्था में प्रकोप अधिक होने पर पौधे कमजोर हो जाते हैं और भुट्टे छोटे आते हैं एवं हवा चलने पर पौधा बीच से टूट जाता है। इस कीट के नियंत्रण हेतु किसान भाई मक्का की फसल में संतुलित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करें। इसके रासायनिक नियंत्रण हेतु क्विनालफास 25 प्रतिशत, ई.सी. 1.5 ली. को 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। उन्होंने बताया कि फॉल आर्मीवर्म ऐसा कीट है, जो कि एक मादा पतंगा अकेले या समूहों में अपने जीवन काल में एक हजार से अधिक अंडे देती है। इसके लार्वा पत्तियों को किनारे से पत्तियों की निचली सतह और मक्के के भुट्टे को भी खाते हैं। इसकी लार्वा अवस्था ही मक्का की फसल को बहुत नुकसान पहुंचाती है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि संतुलित मात्रा में रासायनिक उर्वरकों का सही प्रयोग करें। खेत में पड़े पुराने खरपतवार और अवशेषों को नष्ट करें। इस कीट के नियंत्रण के लिए रासायनिक कीटनाशक जैसे ट्रानिलिप्रोएल 5 प्रतिशत 0.4 मिली की दर से प्रति लीटर पानी या स्पिनेटोरम 11.7 प्रतिशत एस.सी. 0.5 मिली की दर से प्रति लीटर पानी या थायोमेथोक्जाम 12.6 प्रतिशत + लैम्डा साइहेलोथ्रिन मिक्सर 9.5 प्रतिशत जेड. सी. 0.25 मिली प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। अथवा इमामेक्टिन बेंजोएट 1 ग्राम 1 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर दें मक्का, ज्वार तथा बाजरे की फसल के चारो तरफ गेन्दा या लोबिया की बुआई करने से भी कीट का नियंत्रण किया जा सकता है हरे भुट्टे हेतु बोई फसल से भुट्टा तोड़ने के 15 दिन पहले दवा का छिड़काव बंद कर दें।

मक्का,ज्वार, एवं बाजरा फसल में लगने वाले कीटों के नियंत्रण के लिए जारी की एडवाइजरी

जन एक्सप्रेस। कानपुर नगर

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर कानपुर के कृषि वैज्ञानिक डॉ.अजय कुमार सिंह ने मंगलवार को मक्का,ज्वार, एवं बाजरा फसल में लगने वाले कीटों के नियंत्रण के लिए एडवाइजरी जारी की। उन्होंने बताया कि खरीफ मक्का 14049 हेक्टेयर, ज्वार 14676 हेक्टेयर एवं बाजरा की खेती जनपद में 21956 हेक्टेयर क्षेत्रफल में की जाती है। उन्होंने बताया कि मक्के में कार्बोहाइड्रेट 70 फीसदी, प्रोटीन 10 फीसदी के अलावा अन्य पोषक पदार्थ भी पाये जाते है। जिसके कारण इसका उपयोग मनुष्य के साथ-साथ पशु आहार के रूप में भी किया जाता है। उन्होंने बताया कि तना छेदक कीट मक्के के लिए सबसे अधिक हानिकारक कीट है। मक्का के अलावा यह ज्वार एवं बाजरे मे भी हानि पहुँचाता है। इसकी सुंडियां 20 से 25 मिमी लम्बी और स्लेटी सफेद रंग की होती है। जिसका सिर काला होता है और चार लम्बी भूरे रंग की लाइन होती है। इस कीट की सुंडियाँ तनों में छेद करके अन्दर ही अन्दर खाती रहती हैं। फसल के प्रारम्भिक अवस्था में प्रकोप के फलस्वरूप मृत गोभ बनता है परन्तु बाद की अवस्था में प्रकोप अधिक होने पर पौधे कमजोर हो जाते हैं और भुट्टे छोटे आते हैं एवं हवा चलने पर पौधा बीच से टूट जाता है। उन्होंने कहा कि किसान इस कीट के नियंत्रण के लिए मक्का की फसल में संतुलित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करें। इसके रसायनिक नियंत्रण के लिए क्विनालफास 25 प्रतिशत, ई.सी. 1.5 ली. को 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर छिडक़ाव करें। उन्होंने बताया कि फॉल आर्मीवर्म ऐसा कीट है, जो कि एक मादा पतंगा अकेले या समूहों में अपने जीवन काल में एक हजार से अधिक अंडे देती है। इसके लार्वा पत्तियों को किनारे से पत्तियों की निचली सतह और मक्के के भुट्टे को भी खाते हैं। इसकी लार्वा अवस्था ही मक्का की फसल को बहुत नुकसान पहुंचाती है। उन्होंने किसानों को संतुलित मात्रा में रासायनिक उर्वरकों का सही प्रयोग करने की सलाह दी। उन्होंने बताया कि किसान खेत में पड़े पुराने खरपतवार और अवशेषों को नष्ट कर इस कीट के नियंत्रण के लिए रासायनिक कीटनाशक जैसे ट्रानिलिप्रोएल 5 प्रतिशत 0.4 मिली की दर से प्रति लीटर पानी या स्पिनेटोरम 11.7 प्रतिशत एस.सी. 0.5 मिली की दर से प्रति लीटर पानी या थायोमेथोक्जाम 12.6 प्रतिशत + लेम्डा साइहेलोथ्रिन मिक्चर 9.5 प्रतिशत जेड. सी. 0.25 मिली प्रति लीटर पानी में घोलकर छिडक़ाव करें। अथवा इमामे ट्रिन बेंजोएट 1 ग्राम 1 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करे। मक्का, ज्वार तथा बाजरे की फसल के चारो तरफ गेन्दा या लोबिया की बुआई करने से भी कीट का नियंत्रण किया जा सकता है।